कविता शिक्षण के मज़े

धर्मपाल गंगवार

कक्षा में बच्चों के साथ एक कविता पर काम करने के सिलसिलेवार अनुभव इस लेख में हैं। यह कविता पाठ्यपुस्तक की नहीं है, बल्कि भाषा सीखने-सिखाने का काम करने के लिए शिक्षक ने चयनित की है। पूरी अन्तर्क्रिया में बच्चे गर्मजोशी से भागीदारी करते हैं, कविता का अर्थ पकड़ लेते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं, लिखते हैं, और उस कविता को अन्य रचनाओं से, कविता के पात्र को अन्य पात्रों व ख़ुद से भी जोड़कर देख पाते हैं। सीखने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पाठ्यपुस्तक से इतर जाकर भी कक्षा में काम हो सकता है, इसका एक अच्छा उदाहरण यह लेख प्रस्तुत करता है। -सं.

भूमिका

कविता भाषा सीखने-सिखाने का एक मज़ेदार साधन हो सकती है। यदि कविता बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई हो, उनके समझने के स्तर की हो, वह और भी अधिक रोचक व आनन्ददायी हो जाती है। बच्चों की पृष्ठभूमि व स्तर के अनुसार चयन की गई कविता उनसे जुड़ाव बनाने में मदद करती है। बच्चे ऐसी कविताओं से अच्छी तरह से जुड़ जाते हैं। पाठ्यपुस्तक से इतर कविताएँ भी बच्चों के लिए रोचक होती हैं। वे उन्हें सोचने के अधिक मौक़े देती हैं, और जल्दी ही याद भी हो जाती हैं। कविता पढ़ते हुए बच्चे गुनगुनाते हैं तो उन्हें आनन्द की अनुभूति होती है। बच्चों में मौखिक भाषा के विकास के लिए भी कविता एक बढ़िया साधन है। मौखिक भाषा विकास बच्चों को स्वतंत्र लेखन में मदद करता है। इसके उदाहरण भी लेख में दिए गए हैं।

कक्षा में कविता पर काम

हमारे सरकारी विद्यालयों में बच्चों की पृष्ठभूमि को लेकर विविधता होती है। कुछ किसानों के बच्चे होते हैं और कुछ समाज के छोटे-मोटे, लेकिन बहुत ज़रूरी कार्य करने वाले लोगों जैसे– नलसाज, बढ़ई, रिक्शा चालक, आदि के। यह विविधता बच्चों के समग्र विकास के लिए बहुत अच्छी चीज़ है। हमारी पाठ्यपुस्तकों में भी हमें कुछ पाठ इन सन्दर्भों के मिल जाते हैं

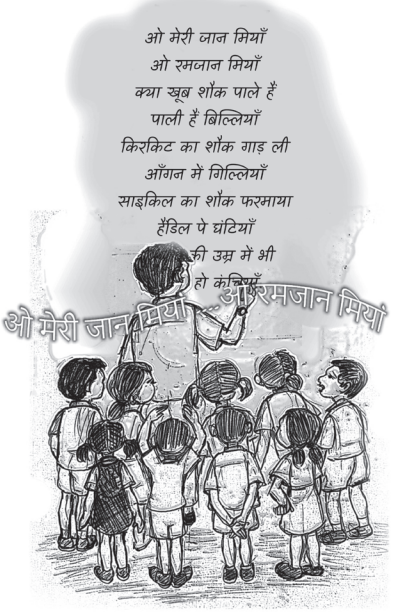

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

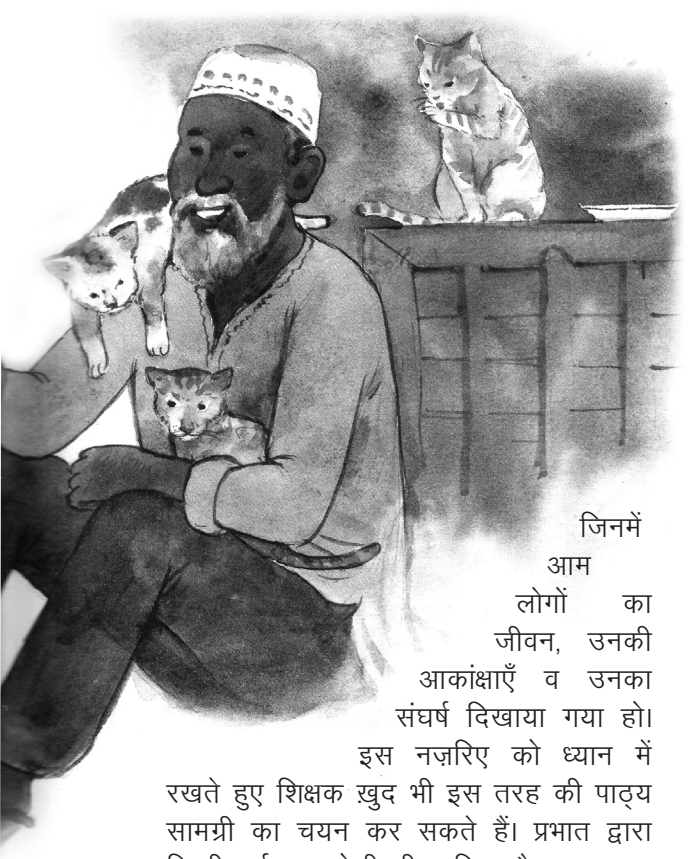

जिनमें आम लोगों का जीवन, उनकी आकांक्षाएँ व उनका संघर्ष दिखाया गया हो। इस नज़रिए को ध्यान में रखते हुए शिक्षक ख़ुद भी इस तरह की पाठ्य सामग्री का चयन कर सकते हैं। प्रभात द्वारा लिखी गई एक ऐसी ही कविता है– 'रमजान मियाँ'। यह कविता बच्चों के परिवेश से जुड़ती है, और उन्हें कविता के मज़े लेने व बातचीत करने का बढ़िया अवसर देती है। इस कविता में कमाल की तुकबन्दी है जो अन्यत्र कम ही देखने को मिलती है। बिल्लियाँ, गिल्लियाँ, कंचियाँ, किश्तियाँ, फब्तियाँ जैसे शब्द पढ़ते हुए बच्चे ख़ूब मज़ा लेते हैं, और बातचीत करते हैं। एक और ख़ास बात कि यह कविता नए शब्दों को भी रच रही है, किरकिट (क्रिकेट) और चालिस (चालीस) को ख़ास अन्दाज़ में लिखा गया है। इस कविता को आप इस लेख के पेज 1 और 3 पर पढ़ सकते हैं।

शुरुआती बातचीत

कक्षा 5 के बच्चों को रमजान मियाँ का चित्र दिखाते हुए मैंने पूछा, "बताओ चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?" एक बच्चे ने कहा, "कोई दादाजी लग रहे हैं।" इसके साथ कई बच्चे बोल उठे, "हाँ-हाँ दादाजी ही हैं। उनके ऊपर बिल्लियाँ लदी हैं।" मैंने कहा, "ठीक है। देखिए, इनका नाम है रमजान मियाँ। रमजान मियाँ पर मेरे पास एक कविता है, जिसे आज हम लोग पढ़ेंगे। रमजान मियाँ थोड़े मनमौजी इंसान हैं। ऐसे लोग तुम्हें अपने आसपास भी दिखाई दे सकते हैं। वे कैसे व्यक्ति हैं; क्या-क्या करते रहते हैं; उनके शौक़ क्या हैं? यह सब हम इस कविता में पढ़ेंगे। तो शुरू करते हैं कविता रमजान मियाँ...।"

कविता शिक्षण : पहला दिन

शुरुआती बातचीत के बाद कविता लिखते हुए बच्चों से कहा गया कि कविता बोर्ड पर लिखी जा रही है, आप लोग साथ-साथ पढ़ते जाइए। एक-एक अन्तरे को, बोली के उतार-चढ़ाव के साथ बोलते हुए कविता बोर्ड पर लिखी गई। 'ओ मेरी जान मियाँ, ओ रमजान मियाँ। क्या ख़ूब शौक़ पाले हैं, पाली हैं बिल्लियाँ।' बच्चे साथ-साथ कविता पढ़ने की कोशिश करने लगे। धीरे-धीरे उन्हें आनन्द आने लगा। पूरी कविता लिख जाने पर कुमकुम तपाक से बोली, "कविता कितनी मस्त लग रही है!" अन्य बच्चों ने भी कहा कि कविता बहुत अच्छी लग रही है। इसके बाद बच्चों ने बारी-बारी से बोर्ड पर लिखी हुई कविता देख-देखकर पढ़ी। जतिन ने प्रिंटआउट से कविता पढ़ी, क्योंकि उसे रमजान मियाँ का चित्र बहुत अच्छा लगा। इसलिए उसे पास से चित्र देखना भी था और बनाना भी। जतिन को चित्र बनाना अच्छा लगता है। इसी बीच एक बच्चे ने कहा, "जैसे बिल्लियाँ चाचा को गुदगुदी कर रही हैं, वैसे ही यह कविता भी गुदगुदी कर रही है।" एक अन्य बच्चे ने कहा, "रमजान मियाँ बच्चों की तरह काम करते थे।" बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा गया, "यह कविता किसने लिखी है?" बच्चे ज़ोर से चिल्लाए, "प्रभात ने।" सब बच्चे कक्षा में बैठे प्रभात की ओर देखकर मुस्कुराने लगे। इसके बाद बोर्ड पर प्रश्न लिखकर मैंने पूछा, "कविता किसके बारे में है?" सभी बच्चों ने एक स्वर में उत्तर दिया, "रमजान मियाँ के बारे में।" फिर दूसरा प्रश्न लिखा गया और पूछा, "बताओ,

रमजान मियाँ के क्या-क्या शौक़ थे?" सबसे पहले जतिन बोल उठा। उसने बताया, "उन्हें बिल्लियों का शौक़ था। वे बिल्लियों से ख़ुश रहते थे तभी तो बिल्लियाँ उनके ऊपर लदी रहती थीं।" अनुज ने कहा, "उन्हें साइकिल का शौक़ था।..." इसी बीच आतिफ़ा ने कहा, "इसीलिए तो साइकिल पर निरी घण्टियाँ लगाए रहते थे।" जतिन ने कहा, "उन्हें कंचे खेलने का भी शौक़ था।" साथ ही उसने यह भी कहा कि बूढ़े लोग कंचे खेलते हुए कैसे लगते होंगे! सब हँसने लगे। कुमकुम बोली, "उन्हें क्रिकेट का भी तो शौक़ था।" अब अन्य बच्चे वही बातें बता रहे थे जो अब तक बताई जा चुकी थीं।

इसी बीच मैंने कविता को फिर से पढ़कर सुनाया। इस बार शायरा बी ने कहा, "वे घूमने के शौक़ीन थे। घूमते रहते थे इसीलिए तो दिल्ली देख आए थे।" शाइस्ता ने बताया, "वह बच्चों के लिए खिलौने भी बनाते थे।" सभी बच्चों ने बारी-बारी से रमजान मियाँ के शौक़ बताए। मैंने कहा, "अभी आपने रमजान मियाँ के जो शौक़ बताए हैं, उन्हें अपनी कॉपी पर लिखते जाइए।" अधिकतर बच्चे लिखने लगे, और कुछ असहज महसूस करते हुए इधर-उधर ताकने लगे। इसके लिए बच्चों को मिलाकर दो समूह बनाए गए। फिर बातें करते हुए बच्चे लिखने में मशग़ूल हो गए।

अब मैंने बोर्ड पर अगला प्रश्न लिखा, "रमजान मियाँ क्या-क्या करते थे?" कई बच्चे बताने के लिए एक साथ बोल उठे। सबसे पहले मुनमुन ने बताया, "वह बच्चों के लिए किश्तियाँ, मिट्टी की गाड़ियाँ और फिरकियाँ बनाते थे।" अमन ने कहा, "वह बच्चों से बहुत प्यार करते थे। वह बहुत अच्छे थे।" शाहीन ने कहा, "वे बच्चों के लिए खिलौने बनाते थे।" इमरान ने बताया, "रमजान मियाँ बच्चों के शौक़ पूरे करने के लिए खिलौने, फिरकियाँ और गाड़ियाँ बनाते थे।" उमर ने कहा, "रमजान मियाँ फक्कड़ आदमी थे। वे बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ बनाते रहते थे।" अफ़साना ने बताया, "वे अजीब क़िस्म के आदमी थे, और बच्चों की तरह काम करते थे।" बच्चों से कहा गया, "आप लोगों ने जो बातें अभी-अभी बताई हैं उन्हें अपनी कॉपी पर लिख लो।"

यहाँ देखने में आया कि जो बच्चे बोलते हैं, वही अच्छे से लिख भी पाते हैं। इस कविता से बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता का अच्छा विकास हो रहा था। वे बोल रहे थे, और बात कर रहे थे। हर प्रश्न का उत्तर बच्चों ने अच्छे से बताया, बातचीत में शरीक हुए, और अपनी कॉपी पर लिखा। मुझे भी प्रश्न और चर्चा को दिशा देने में सहूलियत थी, क्योंकि मैंने इस बात की कुछ लिखित योजना पहले से बना ली थी कि कक्षा में काम कैसे करूँगा। इससे यह फ़ायदा होता है कि चर्चा के बिन्दु याद रहते हैं, और बातचीत भटकती नहीं है।

कविता शिक्षण : दूसरा दिन

अगले दिन इसी कविता पर बातचीत को आगे बढ़ाया गया। बोर्ड पर कविता पहले दिन से ही लिखी हुई थी। बच्चे दौड़े-दौड़े आए और कविता पढ़ने लगे। दूसरे दिन की बातचीत पहले

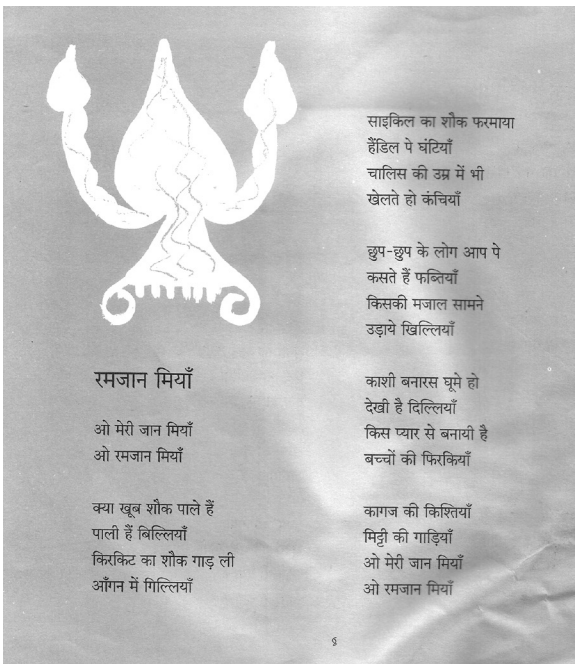

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

दिन हुई चर्चा से शुरू की गई। मैंने बच्चों से कहा, "आप सबने बताया था कि कविता मस्त लग रही है। आज बताइए, यह कविता क्यों मस्त लग रही है?" बच्चों ने बताया, "ऐसा किसी कविता में नहीं आया जिसमें कोई बूढ़ा कंचे खेलता हो, बिल्लियाँ पालता हो, क्रिकेट खेलता हो।" कुछ ने कहा, "रमजान मियाँ अच्छे आदमी होंगे।" मैंने फिर पूछा, "कल आप लोग कह रहे थे कि रमजान मियाँ की फ़ुल मौज थी। यह बताओ, रमजान मियाँ की फ़ुल मौज कैसे थी?" एक बच्चे ने बताया, "रमजान मियाँ बच्चों की तरह रहते थे, इसलिए उनकी फ़ुल मौज थी।" दूसरे ने बताया, "वे अच्छे इंसान होंगे तभी तो बच्चों के लिए खिलौने बनाते थे।" तीसरे ने कहा, "खिलौने बेच भी लेते होंगे। इससे उनका ख़र्च चल जाता होगा।" अब अगला प्रश्न पूछा गया, "रमजान मियाँ के बारे में लोग छुप-छुप कर फब्तियाँ क्यों कसते होंगे?" इसपर बच्चों ने जो उत्तर दिए, वह इस तरह से हैं–

"क्योंकि लोग उनसे डरते होंगे।"

"चालीस की उम्र में कंचे खेलते थे।"

"ताकि वे बुरा न मानें।"

"ताकि वे पीटने न लगें।"

"वे एक अलग तरह के इंसान थे। लोग उनसे जलते होंगे।"

"ताकि वे दुखी न हो जाएँ।"

"लोग डरते होंगे कि कहीं लड़ाई न हो जाए।"

बच्चों द्वारा मौखिक रूप से बताई गई बातों को व्हाइट बोर्ड पर लिखा गया। अब बच्चों से कहा गया कि जो बातें तुम्हें सबसे अधिक सही लग रही हैं, उन्हें अपनी कॉपी पर लिख लो। कुछ और समझ में आ रहा है तो उसे भी लिखो।

इसके बाद मैंने बच्चों से पूछा, "तुम्हारे क्या-क्या शौक़ हैं?" यह व्यक्तिगत प्रश्न पाकर जहाँ कुछ बच्चे अपने शौक़ बताने के लिए उत्सुक नज़र आए, वहीं कुछ मुस्कुराने लगे। वे अपने शौक़ बताने में संकोच कर रहे थे। यहाँ बच्चों को प्रोत्साहित किया। मैंने कहा, "सबके अपने-अपने शौक़ होते हैं। मेरे भी हैं और आपके भी होंगे। इसलिए अपने-अपने शौक़ बताओ।" यह बड़ा ही मज़ेदार अनुभव रहा। अन्ततः कक्षा के सभी 11 बच्चों ने अपने-अपने शौक़ बताए। एकाकी शौक़ वाला कोई भी बच्चा नहीं था। हर बच्चे के एक से अधिक शौक़ थे। शौक़ बताने की शुरुआत अनुज ने की। अनुज अभी अच्छे से किताब नहीं पढ़ पाता है, लेकिन बोलने में आगे रहता है। इसे खेती-बाड़ी का शौक़ है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि कक्षा 5 के अनुज को गाय दुहने का भी शौक़ होगा। इसी तरह से आतिफ़ा का भी शौक़ अजब है। उसे चश्मा पहनने का शौक़ है, वह भी सफ़ेद रंग का। बच्चों ने जो शौक़ बताए, वह बड़े ही रोचक थे। कक्षा में किसी कविता की पढ़ाई के दौरान इस तरह से अपने शौक़ बताने का मौक़ा बच्चों को शायद पहली बार मिला था। इसमें उन्हें बड़ा मज़ा आया, और मुझे भी अपनी कक्षा

के विद्यार्थियों के शौक़ जानने का अवसर मिला। विद्यार्थियों ने जो शौक़ बताए, वे इस तरह से हैं–

छात्र : "गाय का दूध दुहने और भुट्टा खाने का।"

छात्रा : "शादी में जाने, अच्छे कपड़े पहनने, चोटी बनाने और साइकिल चलाने का।"

छात्र : "बकरी के बच्चे को दूध पिलाने और आग जलाने का।"

छात्रा : "कपड़ा सिलने, चूल्हा बनाने, बिक्री करने और पढ़ाई करने का।"

छात्रा : "खाना बनाने, सफ़ेद चश्मा पहनने और कढ़ाई करने का।"

छात्रा : "कपड़े पहनने, खाना बनाने और स्कूल आने का।"

छात्रा : "खाना बनाने, साइकिल चलाने, कंचे खेलने, घूमने और कढ़ाई करने का।"

छात्रा : "घर बनाने, चित्र बनाने, मेले में जाने और अच्छे कपड़े पहने का।"

छात्र : "गन्ना खाने, मेले में जाने, आइसक्रीम खाने, कंचे खेलने और घर बनाने का।"

छात्र : "घूमने, साइकिल चलाने, कंचे खेलने और खेत पर जाने का।"

छात्र : "खेत पर जाने का, खेत खोदने, तुरई या और कोई सब्ज़ी तोड़ने, साइकिल चलाने, स्कूल आने और घूमने का।"

फिर बच्चों से कहा गया कि तुम्हारे जो शौक़ हैं, उन्हें अपनी कॉपी पर लिखो। जो शौक़ बताने से छूट गए हैं, उन्हें भी लिखो। अपने शौक़ लिखने में बच्चों ने ख़ूब मज़ा लिया।

इसके बाद अगला प्रश्न बोर्ड पर लिखा गया, "तुम कहाँ-कहाँ घूमने गए हो?" इस प्रश्न को भी सभी से बारी-बारी पूछा गया। बच्चों ने ख़ुशी-ख़ुशी इस प्रश्न का उत्तर मौखिक रूप से दिया। बातचीत के बाद बच्चों ने अपने द्वारा घूमे गए स्थानों को अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखा।

इसके बाद मैंने बच्चों से कहा कि इस कविता में घण्टियाँ, बिल्लियाँ, गिल्लियाँ जैसे कुछ शब्द आए हैं, उन्हें ढूँढ़कर अपनी कॉपी पर लिखिए। कविता के अतिरिक्त इस तरह के और भी शब्द, जो तुम्हें याद आते हैं, अपनी-अपनी कॉपी पर लिखिए। दूसरे दिन यहीं तक बात हुई। यह कविता पढ़कर बच्चे ख़ुश थे, और मैं भी। रमजान मियाँ कविता पर पढ़ने-लिखने और बातचीत करने पर साथ-साथ काम किया जा रहा था और बच्चों को सोचने के अवसर दिए जा रहे थे, इसलिए लगा कि इस कविता पर एक दिन और काम करना होगा।

कविता शिक्षण : तीसरा दिन

तीसरे दिन बच्चों ने बारी-बारी से कविता पढ़ी, और मैंने भी पढ़कर सुनाई। तीसरे दिन तक कई बच्चों को कविता मौखिक तौर पर याद हो गई थी। इस दिन कक्षा में कुछ नए बच्चे उपस्थित हुए। नए बच्चों को ध्यान में रखते

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

हुए कुछ ऐसे प्रश्न दोहराए गए जिनपर पहले बातचीत की जा चुकी थी। मसलन, यह कविता किसके बारे में है; रमजान मियाँ के क्या-क्या शौक़ थे; वे कहाँ-कहाँ घूमने गए थे; तुम कहाँ-कहाँ घूमने गए हो; तुम्हारे क्या-क्या शौक़ हैं; आदि।

अब मैंने अगला प्रश्न पूछा, "इस कविता को पढ़ने के बाद इस तरह की कोई और कविता तुम्हें याद आ रही है तो सोचकर बताओ।" एक बच्चे ने बताया, "पढ़क्कू।" मैंने पूछा, "कक्षा 4 का पाठ 'पढ़क्कू की सूझ'?" वह बच्चा बोला, "हाँ-हाँ, वही।" और कई बच्चों ने भी हाँ में हाँ मिलाई। दूसरे ने बताया, "भीखूभाई।" इसपर एक अन्य बच्चे ने कहा, "कक्षा 4 के पाठ 'मुफ़्त ही मुफ़्त' वाले भीखूभाई।" बच्चे बोले, "हाँ-हाँ, भीखूभाई भी अजीब काम करते थे।" "रमजान मियाँ की तरह तुमने कोई आदमी देखा है?" मैंने पूछा। एक बच्चे ने बताया, "मुंशी।" उसके बताने पर कई बच्चे हाँ-हाँ करने लगे। इस बच्चे ने 'रमजान मियाँ' कैरेक्टर का मिलान बिलकुल सही किया, क्योंकि वास्तव में यह मुंशी अजीब आदमी था। एक थैला लेकर घूमता रहता था। बक्से, अलमारियाँ ठीक करता था। वह, पतला-सा मरियल आदमी था। कभी ख़रगोश पालता था, कभी कुत्ता-बिल्ली, तो कभी तोता। अजीब तरह से बना घूमता रहता था। अपने में मस्त रहता था। कभी-कभी अपने मामू के क़िस्से मुझे भी सुना जाता था। इस तरह रमजान मियाँ कविता का शिक्षण कार्य पूरा हुआ। बच्चों ने रमजान मियाँ की कहानी को अपने शब्दों में लिखा और चित्र भी बनाए।

निष्कर्ष

अच्छी कविताएँ बच्चों को अलग ही आनन्द देती हैं। ये बच्चों के भाषाई कौशल विकास में भी अहम भूमिका निभाती हैं। बच्चों के परिवेश की कविता होने के कारण बच्चे इस कविता में अच्छे से जुड़ पाए। शब्दार्थ, भावार्थ, अर्थ, आदि की बात करने की ज़रूरत ही महसूस नहीं हुई। बातचीत में बच्चों की भागीदारी दर्शाती है कि बच्चों ने कविता को अच्छे से समझा। मौखिक भाषा का लिखित भाषा से सीधा सम्बन्ध है, और लेखन में मौखिक भाषा ही लिखित भाषा बन जाती है। इस कविता पर की गई बातचीत से बच्चे ख़ुद को अभिव्यक्त कर रहे हैं, वे अपने दिमाग़ से सोच रहे हैं। इस तरह से पाठ्यपुस्तक में दी गई कविताओं से इतर कविताओं से भी भाषाई कौशलों का विकास भली भाँति किया जा सकता है। सबसे ख़ास बात यह रही कि इस कविता में बच्चे अच्छे से जुड़े, और ख़ुश हुए। वे कविता को अपने परिवेश से जोड़ पाए। रमजान मियाँ उन्हें अपने आसपास के ही कोई जाने-पहचाने से व्यक्ति महसूस हुए।

धर्मपाल गंगवार राजकीय प्राथमिक विद्यालय हल्दीपचपेड़ा, खटीमा, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। वे पिछले 27 सालों से अध्यापन के पेशे से जुड़े हुए हैं। उनकी शैक्षिक मुद्दों, भाषा शिक्षण व बच्चों के लिए पुस्तकालय को लेकर गहरी रुचि रही है। इसको लेकर वे अपने स्कूल प्रयोग करते रहे हैं और सीखने-सिखाने का सक्रिय माहौल बना पाए हैं। इसके अलावा उनकी स्वयं की भी पढ़ने-लिखने में रुचि रही है, और नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ते रहते हैं। वर्तमान में वे इस रुचि को अपने साथियों में भी एक समूह के माध्यम से विकसित करने के लिए प्रयासरत हैं।

सम्पर्क : dp09gangwar@gmail.com